

## विचार बिन्दु

दुर्बल चरित्र का व्यक्ति उस सरकंडे जैसा है जो हवा के हर झोंके पर झुक जाता है।-माध

## यह चुप्पी क्या कहती है?

गत तीन माह से, जब से डोनाल्ड ट्रंप दोबारा अमेरिका के राष्ट्रपति बने हैं, वह भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को किसी न किसी बहाने लगातार अपमानित कर रहे हैं, किंतु मोदी द्वारा इसके बारे में कोई वक्तव्य या प्रतिक्रिया न देना आश्चर्य का विषय बन गया है। सबसे पहले तो डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण के अवसर पर भारत के प्रधानमंत्री को आमंत्रित नहीं किया गया, इसके बावजूद कि प्रधानमंत्री डोनाल्ड ट्रंप को अपना बहुत ही निकट का दोस्त बताते रहे हैं। भारत के विदेश मंत्री जयशंकर ने अमेरिका के राष्ट्रपति कार्यालय से इस संबंध में मोदी के लिए निमंत्रण प्राप्त करने का प्रयास भी किया, किंतु वे सफल नहीं हो पाए। बाद में भारत के राष्ट्रीय मीडिया द्वारा इसी बात को प्रमुखता से चिन्ता गयी कि कैसे भारत के विदेश मंत्री जय शंकर को शपथ ग्रहण समारोह के दौरान प्रथम पंक्ति में बिठाया गया। शपथ ग्रहण के कुछ दिनों बाद प्रधानमंत्री अमेरिका गए वे वहां पर व्हाइट हाउस के ओवल कार्यालय में डोनाल्ड ट्रंप से मिले। वहां से उनकी बातचीत का सीधा प्रसारण टीवी के माध्यम से किया गया। इस बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री की मुद्रा स्वाभाविक नहीं लगी और जब अमेरिकी राष्ट्रपति ने अमेरिकी भारत व्यापार के बारे में गलत तथ्य कहे, तो मोदी ने उसका प्रतिकार नहीं किया और वह सिर झुकाए हुए, ट्रंप द्वारा कही गई बातों को सुनते रहे। इसके विपरीत, जब अमेरिकी राष्ट्रपति ने यूक्रेन के राष्ट्रपति जर्लेन्को, फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों से मुलाकात की तो, जब भी राष्ट्रपति ट्रंप ने कोई गलत बात कही, तो उन्होंने, उन्हें रोककर तत्काल प्रतिकार किया और विरोध जताया। यही एक स्वाभिमानी राष्ट्रीय मुखिया से अपेक्षित भी होता है। उनकी मुद्रा भी एक बराबरी के राष्ट्रध्यक्षों की बातचीत जैसी थी। मोदी का यह व्यवहार कुछ आश्चर्यचकित करने वाला था, क्योंकि मोदी सदैव डोनाल्ड ट्रंप को अपना गुरु दोस्त कहकर संबोधित करते रहे हैं। सामान्यतः मोदी प्रत्येक छोटी-बड़ी बात पर सदैव अपनी प्रतिक्रिया किसी न किसी माध्यम से देते रहे हैं किंतु ट्रंप के समक्ष उन्होंने ऐसा नहीं किया।

राष्ट्रपति ट्रंप ने पद ग्रहण करते ही, गैर कानूनी रूप से अमेरिका में रहे रह विदेशी प्रवासियों को ट्रंप द्वारा वापस अपने देश में भेजने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी। भारत के लगभग 200 प्रवासियों को अमेरिकी सेना के हवाई जहाज में भरकर बेडियां लगाकर भारत भेजा गया। यह न केवल अपमानजनक बल्कि अमानवीय भी था, किंतु इसका विरोध न प्रधानमंत्री ने किया न विदेश मंत्रालय ने। वेनेजुएला के प्रवासियों के साथ जब इसी प्रकार का बर्ताव किया गया तो वहां के राष्ट्रपति ने इसका विरोध किया और अमेरिका को स्पष्ट कर दिया कि वे अपना यात्री विमान भेजकर अपने नागरिकों को अपने देश ले जाएंगे।

भारतीयों के इस अपमान का कोई प्रतिरोध न करना, प्रधानमंत्री के उस दावे के साथ मेल नहीं खाता है जो उन्होंने प्रधानमंत्री बनने के पहले कई बार किया कि वे सभी देशों के साथ बराबरी के स्तर पर बात करेंगे और आवश्यकता हुई तो आँखें भी दिखाएंगे। मोदी ने तो इस ट्रंप से मुलाकात के दौरान शायद इसका प्रतीकामक विरोध भी नहीं किया। इसका परिणाम यह हुआ कि आग्लि बार भी इसी तरह भारतीय नागरिकों को अपमानित कर पनामा के माध्यम से भेजा गया। वहां से लौटे एक भारतीय नागरिक सपताल सिंह ने इंडिया टुडे कॉन्क्लेव के दौरान बताया कि उनके साथ अमेरिकियों द्वारा बहुत खराब व्यवहार किया गया। उन्हें बहुत ठंडे तापमान में रखा गया और बीमार होने पर दवा तक नहीं दी गई। अमेरिका ने ऐसा करके न केवल भारत के स्वाभिमान पर आघात किया अपितु भारतीयों के साथ अमानवीय व्यवहार भी किया।

कुछ समय बाद, अमेरिका के राज्यों की गवर्नरों की बैठक में राष्ट्रपति ट्रंप ने स्पष्ट रूप से यह कहा कि मैंने मेरे दोस्त नरेंद्र मोदी को 21 मिलियन डॉलर (अर्थात लगभग 180 करोड़ रूपए) चुनाव के लिए दिए। यह एक प्रकार से सीधा आग्रह था, जिसका खंडन अथवा उस बारे में स्पष्टीकरण भारत के प्रधानमंत्री अथवा भारत सरकार द्वारा किया जाना चाहिए था। देश इसका इंतजार ही करता रहा, किंतु ऐसा अब तक नहीं हुआ, और आज भी राष्ट्रपति का बयान यथावत है।

नरेंद्र मोदी सामान्यतया, विद्यार्थियों से परीक्षा से संबंधित विषयों पर चर्चा करते रहते हैं और अपने स्वाभिमान को बात कहे स्थानों पर करते हैं, किंतु भारतीयों को बेडियां डालकर भेजने पर उसका विरोध तक न करना उनकी कमजोरी और समर्पण भाव की ही दर्शाता है। यह इसलिए भी अधिक अटपटा लगा क्योंकि नरेंद्र मोदी ने बड़े मजबूत और कठोर निर्णय लेने वाले प्रधानमंत्री के रूप में अपनी छवि बनाई है, चाहे तीन तलाक वाला कानून बनाना हो, कश्मीर में धारा 370 हटाना हो, पूरे देश में लोक डाउन लगाना हो या फिर अचानक नोटबंदी की घोषणा हो।

इस बारे में विपक्ष ने जब भी सरकार से स्पष्टीकरण मांगा तो सरकार ने लगातार चुप्पी ही बनाई रखी। जो प्रधानमंत्री 2014 से 24 तक लगातार टीवी पर नियमित रूप से अवतरित होते रहते थे, उन्होंने इन सारी घटनाओं के बावजूद एक बार भी कभी टीवी पर आकर अपना पक्ष नहीं रखा।

डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में गरिमा की सारी सीमा पार करते हुए यहां तक कह डाला कि उन्होंने भारत को एक्सपोज कर दिया है। इसका सीधा मतलब यह है कि उन्होंने भारत की पोला खोल दी है।

ट्रंप के कड़े रुख को भांपते हुए भारत ने बिना अमेरिका के कहे हुए ही, उनके द्वारा निर्मित हालैं डेविडसन मोटर साइकिल और टेस्ला की इलेक्ट्रिक कार पर आयात शुल्क बहुत घटा दिया है। उल्लेखनीय है कि टेस्ला के मालिक एलोन मस्क हैं जो राष्ट्रपति ट्रंप के नजदीकी मित्र हैं। टेस्ला पर तो आयात शुल्क लगभग 110% से घटाकर 15% कर दिया गया है। इससे इस कंपनी को बहुत फायदा होगा और उसका पूरा लाभ एलोन मस्क को जाएगा।

भारत द्वारा इस प्रकार का आत्मसमर्पण कभी नहीं देखा गया और भारत सदैव देश हित में स्वायत्त और स्वतंत्र नीतियां बनाता रहा है। भारत द्वारा विभिन्न अमेरिकी वस्तुओं पर आयात शुल्क इसलिए अधिक रखा जाता है कि उसका भारतीय उद्योगों पर विपरीत प्रभाव न पड़े। अमेरिका ने केवल यह धमकी दी थी कि वे भारत के साथ पारस्परिक रूप से समान आयात शुल्क (टैरिफ) रखेंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि भारत टैरिफ कम नहीं करेगा तो अमेरिका भी भारत से वहां जाने वाली वस्तुओं पर उतना ही अधिक टैरिफ लगाएगा। यदि ऐसा होता है, तो भारतीय निर्यातकों का सामान वहां बिकना बहुत कठिन हो जाएगा जिससे यहां के उद्योगों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

यही नहीं, जब प्रधानमंत्री व्हाइट हाउस में गए और वहां पर एलन मस्क उनसे मिले तो उनके साथ उनके परिवार के सभी सदस्य भी थे और उन्होंने अपने छोटे पुत्र को कंधे पर उठा रखा था। क्या उनका यह व्यवहार हमारे प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा के अनुरूप है?

ट्रंप के प्रतिदिन के बयानों से विश्व में संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है। विभिन्न प्रकार के उनके बयानों के बावजूद, प्रधानमंत्री मोदी का एक शब्द नहीं बोलना और किसी प्रकार की प्रतिक्रिया न देना और विरोध नहीं करना, कई प्रकार की शंकाएं भारतीयों के मन में उत्पन्न कर रहा है कि प्रधानमंत्री आखिर ऐसा क्यों कर रहे हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि डोनाल्ड ट्रंप को भारतीय प्रधानमंत्री की ऐसी कोई कमजोरी हाथ लग गई है जिसके कारण वे प्रधानमंत्री पर दबाव बनाने में कामयाब हो रहे हैं।

गुजरात का मुख्यमंत्री बनने से पहले 1993 के आस पास नरेंद्र मोदी अमेरिका में काफी समय तक रहे थे। उस समय उनकी वहां पर क्या गतिविधियां थीं और वे किससे मिलते थे, इस बारे में सार्वजनिक रूप से बहुत जानकारी उपलब्ध नहीं है। क्या उस समय की कोई घटना ट्रंप की जानकारी में आई है जिसके कारण वे हमारे प्रधानमंत्री को अपमानित करते जा रहे हैं और वे कुछ नहीं बोल पा रहे हैं।

एक कयास यह लगाया जा रहा है कि अमेरिका के चुनाव से पूर्व जब मोदी वहां गए तो वे ट्रंप से नहीं मिले जबकि ट्रंप ने पहले ही यह वक्तव्य दे दिया था कि मोदी उनसे मिलने आएंगे। इसे ट्रंप ने अपना अपमान समझा और शायद वे इसी का बदला ले रहे हों।

प्रधानमंत्री की चुप्पी अडानीकरण के कारण भी हो सकती है, जो अमेरिका में लंबित है। वहां की सरकार ने भारत सरकार के विधि मंत्रालय को एक पत्र भेज कर गौतम अडानी पर सम्मन तामील करने में सहायता मांगी है। कहा तो यह भी जा रहा है कि इसी पत्र को रोकवाने के लिए मोदी आपाधापी में ट्रंप से मिलने अमेरिका गए, किंतु फिर भी वे इसमें सफल नहीं हो पाए।

जो प्रधानमंत्री एक समय रूस, यूक्रेन का युद्ध रुकवाने की बात करते थे और गजा पर लगातार बयान देते थे, वे इतने महत्वपूर्ण विषयों और ट्रंप के अपमानजनक व्यवहार पर एक शब्द तक न बोलें और पूर्णतया चुप्पी साध लें, यह समझ से परे लगता है। इसी प्रकार जो मोदी, पूर्व राष्ट्रपति को, एक देश एक चुप्पी वाली समिति का अध्यक्ष बनाने और स्वायत्त संस्था आर बी आई के गवर्नर को प्रधानमंत्री कार्यालय में सचिव के पद पर लगाने जैसा असामान्य निर्णय लेने की क्षमता रखते हों, वे इतना सब होने पर भी चुप्पी साधे रहें, यह अत्यन्तकम लगता है। इसी कारण यह अटकलें भी लगाई जा रही हैं कि मोदी, कहीं राजनीति से पहलवान्य तो तो नहीं सोच रहे हैं।

इन सब अटकलों पर विराम तो तब ही लगेगा जब प्रधानमंत्री अपनी लंबी चुप्पी तोड़कर ट्रंप के अपमानजनक व्यवहार का उपयुक्त जवाब दें। भारत के नागरिक को यह जानने का हक है कि उनके प्रधानमंत्री ने इस प्रकार आत्मसमर्पण का भाव अपनाकर चुप्पी क्यों साध रखी है? जब तक वे ऐसा नहीं करेंगे, लोग अपनी-अपनी सुविधानुसार इस चुप्पी का अर्थ निकालते रहेंगे।

-अतिथि सम्पादक,  
राजन्त्र भाषावाचक  
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

## राशिफल

मंगलवार 11 मार्च, 2025

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत् 2081, आश्लेषा नक्षत्र रात्रि 2:15 तक, अतिगंड योग दिन 1:17 तक, बालव करण प्रातः 8:14 तक, चन्द्रमा रात्रि 2:15 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरु-वृष, शुक-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वांगी सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 2:15 तक है। रवि योग रात्रि 2:15 से आरम्भ होगा। आज गोविन्द द्वादशी, भौम प्रदोष व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:41 से 11:04 तक, लाभ-अमृत 11:04 से 2:05 तक, शुभ 3:33 से 5:01 तक।

राहूकाल: 3:00 से 04:30 तक। सूर्योदय 6:45, सूर्यास्त 6:29



अविनाश जोशी

सोशल मीडिया आज के इंटरनेट युग का एक अभिन्न अंग है जिसका दुनिया में एक अरब से अधिक लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है। यह एक ऑनलाइन मंच है जो उपयोगकर्ता को एक सार्वजनिक प्रोफाइल बनाने एवं वेबसाइट पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ सहायता करने की अनुमति देता है। सोशल मीडिया नेटवर्किंग के कई रूप हैं जिनमें वेबलॉग, सामाजिक ब्लॉग, माइक्रोब्लॉगिंग, विकीज, सोशल नेटवर्क, पॉडकास्ट, फोटोग्राफ, चित्र, वीडियो शामिल हैं। इन सबमें फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब सबसे ज्यादा प्रचलित हैं। बीते कुछ वर्षों से पूरी दुनिया में इसकी जरूरत और ग्लोबल कम्युनिकेशन में इसके रोल को हाइलाइट करने के लिए वर्ल्ड सोशल मीडिया डे मनाया जाने लगा है। 1997 में दुनिया का सबसे पहले पहला सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लॉन्च हुआ था। इसका नाम सिक्स डिग्री था। इस प्लेटफॉर्म को एंड्रयू वेनरिन ने शुरू किया था।

सोशल मीडिया एक ऐसा टूल है जो अपने यूजर-फ्रेंडली फीचर्स के कारण इन दिनों काफी लोकप्रिय हो रहा है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर और अन्य जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लोगों को दूर-दूर तक एक-दूसरे से जुड़ने का मौका दे रहे हैं। दूसरे शब्दों में, सोशल मीडिया की बदौलत पूरी दुनिया हमारी उंगलियों पर है। युवा

हानिकारक तत्वों में से एक माना जाता है। अगर सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर निगरानी नहीं रखी गई तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। यह आपकी निजता पर हमला करता है। सोशल मीडिया पर होने वाली अनैतिक गतिविधियां बच्चों को शिकारियों और हैकरों का निशाना बनाती हैं। इससे साइबर बुलिंग भी होती है जो किसी भी व्यक्ति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। सोशल मीडिया पर विशेष रूप से बच्चों द्वारा साझा की जाने वाली सामग्री पर हर समय निगरानी रखी जानी चाहिए। कई बार यह लत छात्र जीवन के शैक्षणिक प्रदर्शन में बाधा डालती है क्योंकि वे पढ़ाई के बजाय सोशल मीडिया पर अपना समय बर्बाद करते हैं। सोशल मीडिया सांप्रदायिक दूरार भी पैदा करता है। इसके इस्तेमाल से फर्जी खबरें फैलाई जाती हैं, जो शांतिप्रिय नागरिकों के दिमाग में जहर धोती हैं। स्कूल-कालेजों में बच्चों को इस लत से मुक्ति के नुस्खे समझाए-बताए जाते हैं। मगर चिंता की बात है कि कम होने के बजाय सोशल मीडिया मंचों की लत भयावह रूप लेती जा रही है। एक नए अध्ययन में बताया गया है कि बहुत सारे युवा सोशल मीडिया पर अपने किसी चित्र या टिप्पणी पर मिली पसंद से घृणपान जैसा आनंद महसूस करते हैं। जाहिर है, इसीलिए वे लगातार सोशल मीडिया पर बने रहते हैं। पहले के अध्ययनों से भी जाहिर है कि इससे युवाओं, किशोरों में दिमाग के भीतर पैदा होने वाले आनंद के रसायन का प्रवाह बढ़ जाता है, जिससे उन्हें सुख मिलता है। मगर इस सुख के चलते उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर पड़ता है, युवा इसका अनुमान नहीं ला पाते।

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

विशेष रूप से सोशल मीडिया के सबसे प्रभावशाली उपयोगकर्ताओं में से एक है। जब हम सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलू पर नजर डालते हैं तो हमें इसके कई फायदे नजर आते हैं। सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा के लिए एक बेहतरीन उपकरण होना है। सभी आवश्यक जानकारी बस एक क्लिक दूर है। छात्र सोशल मीडिया का उपयोग करके विभिन्न विषयों पर खुद को शिक्षित कर सकते हैं।

इसके अलावा, सोशल मीडिया के कारण अब लाइव व्याख्यान संभव है। आप भारत में बैठे-बैठे अमेरिका में हो रहे किसी लेक्चर को अटेंड कर सकते हैं जैसे-जैसे अधिक से अधिक लोग अखबारों से दूरी बना रहे हैं, वे खबरों के लिए सोशल मीडिया पर निर्भर हो रहे हैं। इसके जरिए आप दुनिया की ताजातरीन घटनाओं से हमेशा अपडेट रहते हैं। एक व्यक्ति दुनिया के मुद्दों के प्रति सामाजिक रूप से अधिक जागरूक हो जाता है। यह आपके मित्रजनों के साथ संबंधों को मजबूत करता है। सोशल मीडिया के कारण अब दूरी कोई बाधा नहीं रह गई है। उदाहरण के लिए, आप विदेशों में अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ आसानी से संवाद कर सकते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह युवा उभरते कलाकारों को मुफ्त में अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक बेहतरीन मंच भी प्रदान करता है। सोशल मीडिया के जरिए भी आपको रोजगार के बेहतरीन मौके मिल सकते हैं। यह निश्चित रूप से उन कंपनियों को फायदा पहुंचाता है जो अपने ब्रांड का प्रचार करना चाहती हैं। सोशल मीडिया विज्ञापन का केंद्र बन गया है और आपको ग्राहक से जुड़ने के बेहतरीन अवसर प्रदान करता है।

सिक्के के दो पहलू होते हैं इतने अनेक फायदे होने के बावजूद भी सोशल मीडिया हमेशा विवादों के घेरे में ही रहता है तथा कुछ विशेष परिस्थितियों में इसे समाज के सबसे

हानिकारक तत्वों में से एक माना जाता है। अगर सोशल मीडिया के इस्तेमाल पर निगरानी नहीं रखी गई तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। यह आपकी निजता पर हमला करता है। सोशल मीडिया पर होने वाली अनैतिक गतिविधियां बच्चों को शिकारियों और हैकरों का निशाना बनाती हैं। इससे साइबर बुलिंग भी होती है जो किसी भी व्यक्ति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। सोशल मीडिया पर विशेष रूप से बच्चों द्वारा साझा की जाने वाली सामग्री पर हर समय निगरानी रखी जानी चाहिए। कई बार यह लत छात्र जीवन के शैक्षणिक प्रदर्शन में बाधा डालती है क्योंकि वे पढ़ाई के बजाय सोशल मीडिया पर अपना समय बर्बाद करते हैं। सोशल मीडिया सांप्रदायिक दूरार भी पैदा करता है। इसके इस्तेमाल से फर्जी खबरें फैलाई जाती हैं, जो शांतिप्रिय नागरिकों के दिमाग में जहर धोती हैं। स्कूल-कालेजों में बच्चों को इस लत से मुक्ति के नुस्खे समझाए-बताए जाते हैं। मगर चिंता की बात है कि कम होने के बजाय सोशल मीडिया मंचों की लत भयावह रूप लेती जा रही है। एक नए अध्ययन में बताया गया है कि बहुत सारे युवा सोशल मीडिया पर अपने किसी चित्र या टिप्पणी पर मिली पसंद से घृणपान जैसा आनंद महसूस करते हैं। जाहिर है, इसीलिए वे लगातार सोशल मीडिया पर बने रहते हैं। पहले के अध्ययनों से भी जाहिर है कि इससे युवाओं, किशोरों में दिमाग के भीतर पैदा होने वाले आनंद के रसायन का प्रवाह बढ़ जाता है, जिससे उन्हें सुख मिलता है। मगर इस सुख के चलते उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर पड़ता है, युवा इसका अनुमान नहीं ला पाते।

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

सोशल मीडिया पर विशेष रूप से बच्चों द्वारा साझा की जाने वाली सामग्री पर हर समय निगरानी रखी जानी चाहिए। कई बार यह लत छात्र जीवन के शैक्षणिक प्रदर्शन में बाधा डालती है क्योंकि वे पढ़ाई के बजाय सोशल मीडिया पर अपना समय बर्बाद करते हैं। सोशल मीडिया सांप्रदायिक दूरार भी पैदा करता है। इसके इस्तेमाल से फर्जी खबरें फैलाई जाती हैं, जो शांतिप्रिय नागरिकों के दिमाग में जहर धोती हैं। स्कूल-कालेजों में बच्चों को इस लत से मुक्ति के नुस्खे समझाए-बताए जाते हैं। मगर चिंता की बात है कि कम होने के बजाय सोशल मीडिया मंचों की लत भयावह रूप लेती जा रही है। एक नए अध्ययन में बताया गया है कि बहुत सारे युवा सोशल मीडिया पर अपने किसी चित्र या टिप्पणी पर मिली पसंद से घृणपान जैसा आनंद महसूस करते हैं। जाहिर है, इसीलिए वे लगातार सोशल मीडिया पर बने रहते हैं। पहले के अध्ययनों से भी जाहिर है कि इससे युवाओं, किशोरों में दिमाग के भीतर पैदा होने वाले आनंद के रसायन का प्रवाह बढ़ जाता है, जिससे उन्हें सुख मिलता है। मगर इस सुख के चलते उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर पड़ता है, युवा इसका अनुमान नहीं ला पाते।

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

सोशल मीडिया पर विशेष रूप से बच्चों द्वारा साझा की जाने वाली सामग्री पर हर समय निगरानी रखी जानी चाहिए। कई बार यह लत छात्र जीवन के शैक्षणिक प्रदर्शन में बाधा डालती है क्योंकि वे पढ़ाई के बजाय सोशल मीडिया पर अपना समय बर्बाद करते हैं। सोशल मीडिया सांप्रदायिक दूरार भी पैदा करता है। इसके इस्तेमाल से फर्जी खबरें फैलाई जाती हैं, जो शांतिप्रिय नागरिकों के दिमाग में जहर धोती हैं। स्कूल-कालेजों में बच्चों को इस लत से मुक्ति के नुस्खे समझाए-बताए जाते हैं। मगर चिंता की बात है कि कम होने के बजाय सोशल मीडिया मंचों की लत भयावह रूप लेती जा रही है। एक नए अध्ययन में बताया गया है कि बहुत सारे युवा सोशल मीडिया पर अपने किसी चित्र या टिप्पणी पर मिली पसंद से घृणपान जैसा आनंद महसूस करते हैं। जाहिर है, इसीलिए वे लगातार सोशल मीडिया पर बने रहते हैं। पहले के अध्ययनों से भी जाहिर है कि इससे युवाओं, किशोरों में दिमाग के भीतर पैदा होने वाले आनंद के रसायन का प्रवाह बढ़ जाता है, जिससे उन्हें सुख मिलता है। मगर इस सुख के चलते उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर पड़ता है, युवा इसका अनुमान नहीं ला पाते।

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

सोशल मीडिया पर विशेष रूप से बच्चों द्वारा साझा की जाने वाली सामग्री पर हर समय निगरानी रखी जानी चाहिए। कई बार यह लत छात्र जीवन के शैक्षणिक प्रदर्शन में बाधा डालती है क्योंकि वे पढ़ाई के बजाय सोशल मीडिया पर अपना समय बर्बाद करते हैं। सोशल मीडिया सांप्रदायिक दूरार भी पैदा करता है। इसके इस्तेमाल से फर्जी खबरें फैलाई जाती हैं, जो शांतिप्रिय नागरिकों के दिमाग में जहर धोती हैं। स्कूल-कालेजों में बच्चों को इस लत से मुक्ति के नुस्खे समझाए-बताए जाते हैं। मगर चिंता की बात है कि कम होने के बजाय सोशल मीडिया मंचों की लत भयावह रूप लेती जा रही है। एक नए अध्ययन में बताया गया है कि बहुत सारे युवा सोशल मीडिया पर अपने किसी चित्र या टिप्पणी पर मिली पसंद से घृणपान जैसा आनंद महसूस करते हैं। जाहिर है, इसीलिए वे लगातार सोशल मीडिया पर बने रहते हैं। पहले के अध्ययनों से भी जाहिर है कि इससे युवाओं, किशोरों में दिमाग के भीतर पैदा होने वाले आनंद के रसायन का प्रवाह बढ़ जाता है, जिससे उन्हें सुख मिलता है। मगर इस सुख के चलते उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर पड़ता है, युवा इसका अनुमान नहीं ला पाते।

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्यापक होता है। मगर

आज वैचारिक और वैश्विक स्तर पर फैलती संकीर्णता के दौर में यह जीवन भी सिमटाता जा रहा है और कई बार हम अपनी हरकतों पर भी इतराते फिरते हैं। हैरानी की बात यह है कि सार्वजनिक जगहों पर ओछेपन को सराहने वाले लोग भी दिख जाते हैं। सड़क पर सोशल मीडिया के लिए 'रील' बनाने युवा लोकप्रियता के लालच में हर तरह की मर्यादा को भूल रहे हैं। अपने पर आ जाओ किम को लेकर भी लापरवाह हो रहे हैं। सोशल मीडिया के अनुसार जो दिखता है, वही बिकता और टिकता है। विविध आनालाइन मंचों का दायरा आज काफी विस्तृत हो गया है। इसलिए इसका असर भी व्याप